

ग्रसाधारण

### EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3--उप**ल**ण्ड (ii)

PART U-Section 3-Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित

## PUBLISHED BY AUTHORITY

€ 378]

्निई विल्ली, मंगलवार, अक्टूबर 8, 1968/आदियन 16, 1890

No. 378]

NEW DELHI, TUESDAY, OCTOBER 8, 1968/ASVINA 16, 1890

इस भाग में भिन्न पुष्ठ संख्या दो जाती है जिससे कि यह ग्रजन संकलन क रूप में रखा जा सके । Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

#### MINISTRY OF HOME AFFAIRS

### NOTIFICATION

New Delhi, the 8th October 1968

- S.O. 3612.—In pursuance of clause (1) of article 239 of the Constitution, and i n partial modification of the Notification of the Government of India in the Ministry of Home Affairs No. S.O. 3269 dated the 1st November, 1966, in so far as it relates to the exercise of powers and functions under the Land Acquisition Act, 1894 (1 of 1894) by the Administrator of the Union Territory of Chandigarh, the President hereby directs that, subject to his control and until further orders, the powers and functions of the appropriate Government under—
  - (i) the Land Acquisition Act, 1894 (1 of 1894), except those of the Central Government under the provisos to sub-section (1) of section 55, and
  - (ii) the Land Acquisition (Companies) Rules, 1963,

shall also be exercised and discharged by the Administrator of the Union Territory of Chandigarh, within the said Union Territory.

[No. F. 2/8/68-UTL.]

K. R. PRABHU, Jt. Socy.

# गृह मंत्रालय

## ग्रधिसूचना

नर्ड दिल्ली, 8 ग्रक्ट्बर, 1968

का० मा० 3613 — संविधान के म्रनु- ंद 239 के खण्ड (1) के म्रनुसरण में, भीर भारत सर्व-र के गृह मंत्रालय की शिधियूचना संख्या का० आ० 3269, तारीख 1 नवम्बर, 1966 के जहां तक वह चण्डीगढ़ के संघ राज्यक्षेत्र के प्रशासक द्वारा भूमि ग्रर्जन म्रिधिनयम, 1894 (1894 का 1) के म्राधीन की मित्तयों भ्रीर कृत्यों के प्रथीग से सम्बन्धित है, भागतः उपान्तरण में राष्ट्रपति एतद्दारा निर्वेष देते है कि उनके नियवण के अध्यक्षीन रहते हुए भ्रीर जब तक कि म्रतिरिक्त भादेश न हो,—

- (i) भूमि प्रजंन प्रधिनियम, 1894 (1894 का 1) की धारा 55 की उपधारा (1) के परन्तुकों के प्रधीन केन्द्रीय रारकार की विवयों और कृत्यों को छोड़कर उस अधिनियम के अधीन समुचित रारकार की, शिवतयों और कृत्यों का, और
- (ii) भूमि ग्रर्जन (कम्पनी) नियम, 196 के प्रधान समुचित सरकार की शक्तियों भीर करों का.

प्रयोग भीर निर्वहन चण्डीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र के प्रशासक द्वारा भी उक्त संघ राज्यक्षेत्र के अन्दर किया जाएगा।

> [सं० फा० 2/8/68 संरा०ला०.] के० ग्रार० प्रभु, रांयुक्त सचित्र ।